Vol II Issue IV Oct 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 4, Oct 2012
ISSN:-2231-5063

Available on all social networks
citeulike

ORIGINAL ARTICLE

GRT

प्रगतिवादी काव्यधारा–प्ररेणा स्रोत और प्रवृत्तियॉ

अमृतपाल कौर , संजीव कुमार

सहायक प्रोफैसर, आई. ई. टी. वी. ई. ,पंजाब यूनिवर्सटी, चण्डीगढ़
प्रोफैसर, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद यूनिवर्सटी, रोहतक

सारांश :

प्रगतिवाद काव्यधारा का विकास

प्रगतिवाद आन्दोलन का सूत्रपात राष्ट्रीय स्वतन्त्रता–आन्दोलन की पृष्ठभूमि में हुआ था। आरम्भ में प्रगतिवादी आन्दोलन राष्ट्रीय–आन्दोलन के अभिन्न अंग के रूप में ही उदित हुआ। भारत में सन् 1934 ईण में भारतीय साम्यवादी विचारधारा से अनुप्राणित साहित्य ही प्रगतिवादी साहित्य ही प्रगतिवादी साहित्य कहा जाने लगा।

प्रगतिवादी का अर्थ और स्वरुप ––

प्रगति शब्द अग्रेंजी के 'प्रोगेस' का हिन्दी रुपान्तर हैं जिसका अर्थ हैं––आगे बढ़ना अथवा उन्नति करना । एक ऐसा परिवर्तन लाना, जो किसी वस्तु, गुण या परिणाम में वृद्धि ला सके। निश्चय ही साहित्य में यह शब्द हमारे जीवन से सम्बद्ध हो कर प्रयुक्त हुआ हैं।

प्रगतिवाद शब्द के मूल में 'प्रगति' शब्द समाहित हैं। 'प्रगति' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के अनुसार 'प्र + गम् + क्तिन्' से हुई हैं, जिसका अर्थ पूर्ण अथवा उत्कृष्ट रुप से किसी भाव को, किसी विचार को गतिमान करना हैं।

प्रगतिवाद साहित्य की संज्ञा उस साहित्य को दी गई जो छायावाद की समाप्ति पर सन् 1936 ई. के आसपास सामाजिक चेतना को लेकर निर्मित हुई। इस काव्यधारा में मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना और भाव–बोध को अपना लक्ष्य बना कर चली। प्रगतिवादी साम्यवादी दर्शन की साहित्यिक या भावात्मक अभिव्यक्ति हैं। इस प्रकार स्पष्ट हैं कि प्रगतिवाद साम्यवाद का पर्याय नहीं हैं, वरन् उस की प्ररेणा से निर्मित वह गतिशील सामाजिक चेतना हैं जो शोषण और अत्याचार के बल पर सामान्य जन की प्रगति में प्रतिरोध पैदा करने वाली पूॅजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करती हैं और समतामूलक विकासशील सामाजिक व्यवस्था में सुदृढ़ विश्वास रखती हैं। प्रगतिवाद साहित्य साम्यवादी दर्शन की प्ररेणा से समतामूलक भाव–बोध को वाणी देना अपना लक्ष्य समझता हैं । प्रगतिवाद काव्य के उद्भव और विकास में राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय परिस्थितियॉ तो सहायक हुई थी। प्रगतिशीलता जहॉ किसी वाद विशेष की सूचक नहीं हैं। कोई भी विचार जो समाज की प्रगति में सहायक होता हैं 'प्रगतिशील' कहा जा कहा जा सकता हैं। जबकि 'प्रगतिवाद' का विशुद्ध मार्क्सवादी विचारों से लिया जाता हैं। इसीलिए प्रगतिवाद की परिभाषा करते हुए कहा गया हैं कि राजनीति के क्षेत्र में जो मार्क्सवाद हैं, वही साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद हैं। इस प्रकार देश की अवस्था प्रगतिवादी विश्वासों और स्वरों के लिए उपयुक्त भूमि बन रही थी।

प्रगतिशील लेखक–संघ :

1936 ई. के अप्रैल में 'प्रगतिशील लेखक–संघ' की स्थापना के लिए लखनऊ में प्रथम प्रगतिशील लेखक सम्मेलन आयोजित किया गया और इसके अध्यक्ष प्रेमचन्द बनाये गये। लखनऊ के इस 'प्रगतिशील लेखक–सम्मेलन' में बड़े ही उत्साह के साथ हिन्दी और उर्दू के साहित्यकारों, प्रादेशिक भाषाओं–बोलियों के रचनाकारों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों ने बहुत भारी सख्या में भाग लेकर इसका स्वागत किया। इसके बाद काग्रेंस अधिवेशन में शामिल होने वाले कुछ सजग राजनीतिक नेताओं ने भी 'प्रगतिशील लेखक सम्मेलन में भाग लेने का आश्वासन देकर 'प्रगतिशील लेखक संघ' को नैतिक बल प्रदान किया। ये राजनीतिक नेता ––नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण, कमला देवी चट्टोपाध्याय, मिंया इफ्तखारुद्दीन तथा सरोजिनी नायडू आदि थे।

'प्रगतिशील लेखक संघ' के अध्यक्ष प्रेमचन्द थे। अध्यक्षीय भाषण में प्रेमचन्द ने साहित्य के उद्देश्य, उसकी परिभाषा और उसकी सौन्दर्याभिव्यक्ति पर बल देते हुए कहा कि– ''साहित्य का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास और मनोरंजन नहीं हैं। जीवन तथा समाज की छवियों को अपने में मूर्तकर मानव–समाज का कल्याण करना चाहिए। ''उन्होंने साहित्य को दलित, पीड़ित तथा वंचित के निकट लाने के लिए सम्मेलन में आये प्रगतिशील लेखकों से निवेदन किया । सौन्दर्य की कसौटी बदलने पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि जो वस्तु अमीर के लिए सुख का साधन हैं वह गरीब के लिए दुःख का कारण भी हो सकती हैं।

इसके साथ ही अधिवेशन में प्रगतिशील लेखक संघ के उद्देश्यों को एक घोषणा–पत्र के रुप में वितरित किया गया। उस घोषणा–पत्र में चार बातों पर बल दिया गया था।1

(1) स्वतन्त्रता और स्वतन्त्र विचार की रक्षा करना।
(2) प्रगतिशील लेखकों और अनुवादकों को प्रोत्साहित करना व प्रतिक्रियावादी प्रवृतियों के विरुद्ध संघर्ष करके देशवासियों के स्वाधीनता संग्राम को आगे बढ़ाना।

Please cite this Article as : *अमृतपाल कौर , संजीव कुमार , प्रगतिवादी काव्यधारा–प्ररेणा स्रोत और प्रवृत्तियॉ* **: Golden Research Thoughts (Oct. ; 2012)**

(3) प्रगतिशील लेखकों की सहायता करना।
(4) भारत के तमाम प्रगतिशील लेखकों की संस्थाए संगठित करना और साहित्य छापकर अपने उद्देश्यों का प्रचार करना।
इस प्रकार प्रगतिशील लेखक सघं बृहत् उद्देश्यों से परिचालित हो कर नव लेखन को प्रोत्साहित करने में एक ऐतिहासिक भूमिका अदा कर रहा था। 'प्रगतिशील लेखक–संघ' का विस्तार समूचे देश में हुआ और समय–समय पर इसके सम्मेलन भी होते रहे।

1936 के बाद 1938 में कलकत्ता में इसका सम्मेलन हुआ। इसकी अध्यक्षता के लिए रवीन्द्रनाथ ठाकुर आमंत्रित थे, लेकिन अस्वस्थता के कारण नहीं आ पाये और उन्होंने लिखित संदेश भेजकर साहित्य को जनता के अधिक निकट लाने का आग्रह किया।

प्रगतिशील लेखक–संघ की बैठक 1940 ई. में पूना हुई, जिसके अध्यक्ष पड़ित नंद दुलारे वाजपेयी थे। इन्होंने साहित्य में बढ़ती हुई यथार्थवादी धारा का उल्लेख कर पुनरुत्थावादी लेखकों की कुठिंत प्रतिभा पर प्रहार किया। 1942 ई. में फासीवाद के विरोध तथा बगांल के अकाल के बारे में जनमत तैयार करने के लिए जगह–जगह प्रगतिशील लेखक सम्मेलन और अधिवेशन किए गए। दिल्ली में फासिस्ट विरोधी प्रगतिशील लेखक सम्मेलन 1942 ई. में हुआ। अज्ञेय से लेकर कृष्णचन्द्र तक सभी प्रकार के लेखकों ने उसमें भाग लिया। यह एक विशाल सम्मेलन था। इस सम्मेलन का उद्देश्य फासीवाद का विरोध करना था।

1942 ई. में ही प्रगतिशील लेखक–संघ की स्थानीय शाखा का अधिवेशन हुआ,जिसमें नागरिक स्वतन्त्रता के सवाल पर एकजुटता जाहिर की गई। ब्रिटिश सरकार के अत्याचारी रवैये पर चिन्ता जताई गई।

'हंस' प्रगतिशील लेखक संघ की मुख्य पत्रिका थी। अतः इसने फासीवाद और दमन के विरुद्ध अपील प्रकाशित कर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और शिवदान सिंह चौहान की गिरफ्तारी की निन्दा की।

बगांल में प्रगतिशील लेखक–संघ का फासिस्ट विरोधी सम्मेलन 1943 ई. और 1944 ई. में हुआ। इसके अध्यक्ष ताराशंकर विद्याकपाध्याय थे। इसमें भी मुनाफाखोरी, जंगबाजों और फासिज्म के खिलाफ सामूहिक रुप से आन्दोलन करने का लेखकों से आग्रह किया था। इसी प्रकार मध्य भारत में उज्जैन में गजानन माधव 'मुक्तिबोध' के प्रयास से 'भारत फासिस्ट विरोधी लेखक सम्मेलन' हुआ।

1944 ई. में इन्दौर में 'भारत फासिस्ट विरोधी लेखक सम्मेलन' हुआ, जिसकी अध्यक्षता राहुल सांकृत्यायन ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में राहुल ने कहा कि सास्ंकृतिक निधि की रक्षा और नव–निर्माण की अभिलाषा, यही वे बातें हैं, जिन्होंने हमें फासिस्टवाद का घोर विरोधी बनाया। हमें अफसोस हैं कि हमारे कितने ही साहित्याकार अभी इसे समझते नहीं हैं कि फासिस्टवाद दुनिया की हरेक जाति का सस्ंकृति और नव–निर्माण का कितना महान शत्रु हैं (हंस जनवरी–फरवरी 1944 ई.) फासिस्ट विरोधी लेखकों के प्रभाव से विभिन्न प्रान्तों में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई। इस दौर में बिहार प्रांतीय प्रगतिशील लेखक संघ का प्रथम अधिवेशन जनवरी 1944 ई. में हुआ। इस अधिवेशन रामधारी सिंह दिनकर थे। उन्होंने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आन्दोलन लेखन सिर्फ लेखनी के बल पर नहीं बल्कि आम जनता के साथ मिलकर करना चाहिए।

1946 ई. में ही प्रगतिशील लेखक संघ का क्रेन्दीय कार्यालय बम्बई आ गया था। वही सबसे बड़ा 'अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' का सम्मेलन हुआ, जिसके अध्यक्ष कम्युनिस्ट पार्टी के नेता श्री पाद अमृत डांगे ने की। प्रगतिशील लेखक संघ के कार्यो को 'नया साहित्य', 'जनयुग', तथा 'नया अदब' आदि पत्रिकाओं ने प्रकाशित कर उसे आगे बढ़ाने में सहायता दी।

अजादी के बाद इलाहाबाद में सितम्बर 1947 ई. में अखिल भारतीय हिन्दी प्रगतिशील लेखक संघ का विशाल अधिवेशन हुआ। इसके घोषणा–पत्र में जनवादी शक्तियों को मजबूत कर देश की जनता के सांस्कृतिक धरातल को ऊपर उठाने का आग्रह किया गया। ''देश में एकता और जनतन्त्र स्थापित करने में हिन्दी के लेखक कभी पीछे नहीं रहेंगे और प्रगतिशील लेखक संघ सभी दलों, सभी पार्टियों का आह्वान करता हैं कि वे संघ में आयें और इस कार्य में हमारा हाथ बंटायें।''

1949 ई. में प्रगतिशील लेखक संघ का अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ जिसके अध्यक्ष नागार्जुन थे। उन्होंने मजदूरों, शोषितों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य पर बल देते हुए कहा कि ––''हम नेहरु और पटेल की काव्यधारा थाप पर थिरकने–ठमकने वाले आर्टिस्ट नहीं हैं। सर्वसाधारण जनता को ही हम अपनी अधिस्वामिनी समझते हैं। हमारी सारी कल्पनाओं और प्ररेणाओं का मूल स्रोत वही हैं।

1949 ई. में भिंवड़ी में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक सघं का सम्मेलन हुआ। इसके घोषणा–पत्र में स्वाधीनता के बाद देशी शासकों की राजनीतिक गतिविधियों का उल्लेख कर स्वदेशी सरकार की नीतियों की आलोचना की गई।

दिल्ली में पुनः प्रगतिशील लेखक संघ का सम्मेलन हुआ। रामविलास शर्मा को अखिल भारतीय लेखक संघ के महामन्त्री पद से हटाकर कृशनचन्दर को महामन्त्री बनाया गया। इसने घोषणा–पत्र में विश्व शान्ति के लिए प्रयास किया। इसमें बताया गया कि हमारी जनता दुनिया के तमाम राष्ट्रों के साथ शान्ति और मित्रता के सम्बध बनाना चाहती हैं।

प्रगतिशील लेखक संघ आरम्भ से ही विरोधों का सामना करता हुआ बढ़ रहा था। इसके विरोधियों ने 'हंस', प्रेमचन्द और संघ पर लगातार हमला किए। प्रगतिशील लेखक संघ को लखनऊ के अधिवेशन में ब्रिटिश सरकार का असेर हिन्दू पुनरुत्थानवादी लेखकों की और से विरोध सहना पड़ा। इतने विरोधों के बावजूद प्रगतिशील लेखक संघ के साहित्यिक कार्यक्रम में कोई परिवर्तन नहीं आया और साहित्य के क्षेत्र में जनवादी दृष्टिकोणों को महत्व मिला।

इस नवीन विचारधारा को कई पत्र–पत्रिकाओं का सहयोग मिला। सबसे पहले 'हंस' ने प्रगतिशील लेखक संघ के उद्देश्य, उसके सम्मेलनों की रिपोर्ट प्रकाशित करना आरम्भ किया। 1938 में 'रुपाभ' के माध्यम से भी नयी साहित्यधारा को बल मिला। रुपाभ के ईलावा अमृतलाल नागर के सम्पादन में 'चकल्लस' नामक व्यंग्य और हास्य प्रधान साप्ताहिक प्रकाशित हुआ।

प्रगतिवाद काव्य–धारा के प्रमुख कवि :

जो साहित्य प्रगतिवादी आन्दोलन की प्ररेणा से, खास किस्म के राजनीतिक विचारों की छाया लिए, सामाजिकता अथवा मानवतावाद की विशिष्ट धारणाओं से निम्रित हैं वह प्रगतिवादी साहित्य हैं। जिस साहित्य में बिना किसी राजनीतिक दुराग्रह के सहज मानवीय विकास की प्ररेणा निहित हो वह प्रगतिशील साहित्य हैं।

(क) प्रगतिवादी कवि –

शिवमंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन शास्त्री, रामविलास शर्मा, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, रांगेय राघव, गजाजन माधव 'मुक्तिबोध' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

(ख) प्रगतिशील कवि –

नरेश मेहता, भारत भूषण अग्रवाल, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', गिरिजाकुमार माथुर, शमशेर बहादुर सिंह, नेमिचन्द्र जैन आदि प्रगतिशील कवि है।

प्रगतिवादी काव्य–धारा के प्ररेणा–स्रोत

साहित्य समाज का दर्पण हैं। समाज में होने वाली प्रत्येक घटना साहित्य का रुप धारण कर लेती हैं। विश्व–साहित्य की किसी भी काव्य–धारा का जन्म अनायास एक आकस्मिक घटना के रुप में कभी नहीं हुआ। प्रत्येक धारा परिस्थितिप्रसूत होती हैं। ये परिस्थितियां निम्न रुप से हो सकती हैं–

1 युगीन परिवेश :

(क.) भारत की विपरीत राजनीतिक परिवेश और राष्ट्रीयता का हमारे जीवन और साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इसी स्थिति ने हमारे जीवन और साहित्य की पूर्व धारा को मोड़ कर 'प्रगतिवाद' को जन्म दिया था और फिर 'प्रगतिवादी साहित्य' का सृजन अनिवार्य हो गया।

(ख.) हमारा सामाजिक परिवेश तथा विषमताएँ भी 'प्रगतिवाद' को जन्म देने के लिए सहयोगी हैं। हमारा सामाजिक परिवेश मुख्य रुप से बहुत से महापुरुषों के विचारों से प्रभावित हुई हैं। इनमें से कुछ प्रमुख महापुरुष हैं–
स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं।

(ग.) साहित्यिक परिवेश और प्रगति–चेतना भी प्रगतिवाद' को जन्म देने के लिए सहयोगी रही हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन पर्याप्त संख्या में होने लगा था। इससे नए विचारों का ग्रहण और रुढ़ियों का त्याग की दिशा में एक राष्ट्रीय जीवन में भी बदलाव आया। छापेखाने के प्रसार के कारण साहित्यकारों को व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का अवसर भी मिला। इसीलिए आधुनिक काल के साहित्य में विविधता, वैयक्तिक कल्पना, बौद्धिकता और प्रयोगधर्मिता का विकास हुआ। साहित्य और कला–सम्बन्धी आन्दोलनों को भी छापेखाने के कारण ही अभिव्यक्ति मिल सकी

(घ.) आर्थिक परिवेश और कृषक आन्दोलन ने भारत की विपरीत का हमारे जीवन और साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इसी स्थिति ने हमारे जीवन और साहित्य की पूर्व धारा को मोड़ कर 'प्रगतिवाद' को जन्म दिया।

2 विदेशी चिन्तन धाराओं का प्रभाव

हिटलर, मुसोलिनी की क्रूरता एंव अंग्रेजों के कटु व्यवहार ने भारतीय जन–जीवन को अधिकाधिक यर्थाथवादी बना दिया था। भारतीय अपने अधिकारों और स्वतन्त्रता के लिए सचेत हो गये थे। मार्क्सवादी साम्यवादी दल के बढ़ते प्रभाव से तत्कालीन कवि और साहित्यकार प्रभावित होने लगे और हिन्दी साहित्य में नयी विचारधारा का अभ्यास होने लगा।

3 छायावाद का प्रभाव

छायावाद काव्य में प्रेम था, श्रृंगार था, नवीन कल्पनाओं का समावेश था और वैयक्तिकता की प्रधानता थी, किन्तु उसे सर्वथा सामाजिकता से रिक्त और जीवन से दूर नहीं किया जा सकता। युग–जीवन की विषमताओं, विवशताओं और निराशा ने छायावादी कवियों को व्यक्तिवादी बना दिया था। छायावादी युग के उत्तराकाल में हमें काव्य के छह रुप दिखाई देते हैं ––
श्रृंगार काव्य, मानवतावादी काव्य, निराशावादी काव्य, वर्ग–संघर्ष–भावनायुक्त काव्य, राष्ट्रीय काव्यधारा, यर्थाथवादी काव्य।

4 नारी–आन्दोलन

बीसवीं शती में भी जहॉ एक और राष्ट्रीयता का विकास होता रहा, भारतीय स्वतन्त्रता–आन्दोलन भी गतिशील बनता गये। सन् 1906 ई. में 'डिप्रेस्ड क्लासेस मिशन' की स्थापना हुई, जिसके द्वारा भारतीय दलित समाज के अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए। इसके पश्चात् 'इण्डियन सोशल कान्फ्रेंस' के द्वारा भी दलित–वर्ग–उत्थान, स्त्री– शिक्षा, बाल–विवाह–निषेध, जाति–भेद–उन्मूलन आदि की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए।
कवि मिलिन्द की कविताओं में उनका नारी सम्बन्धी स्थूल दृष्टि का पता चलता हैं। 'भूमि की अनुभूति' की 'नवयुग और नारी' सम्बन्धी कविता इसका परिणाम हैं। कवि नारी को संबोधित करता हुआ कहता हैं कि तुम जड़ता, आडम्बर,
शोषण आदि को समाप्त कर दो। समय समाप्त हो गया हैं। अब तुम क्रांन्ति की ज्वाला की चिंगारी बनो।
''कर पदाघात अब मिथ्या के मस्तक पर

सत्यान्वेषंण के पथ पर निकलो नारी।''3

5 धर्म और आध्यात्मिकता की प्रतिक्रिया

जिस उज्ज्वल, उत्कृष्ट और लोक–कल्याणकारी पृष्टभूमि पर वैदिक काल में धर्म के स्वरुप की कल्पना की गई थी, उसमें महाभारत काल के पश्चात् विकृति आरम्भ हो गयी। कर्म–काण्ड के प्रवेश के साथ उससे धर्म के नाम पर रुढ़ियों का समावेश हो गया था। धर्म के निर्माण के नाम पर वैदिक ऋषियों और मनीषियों ने मानव के उत्थान व समाज में वर्ग–चेतना उत्पन्न करने तथा शोषित–वर्ग को संघर्ष करने के लिए सर्वप्रथम ईश्वर, धर्म, परलोक, एंव भाग्य सम्बन्धी विचारों का उन्मूलन करना आवश्यक हो गया था।

6 भाषिक क्रान्ति

प्रगतिवादी कवियों ने काव्य–भाषा को न केवल व्यापकता दी बल्कि उसे सरल तथा सुबोध बनाने का प्रयत्न किया, क्योंकि उसे अपने भावों को जन–जन तक पहुॅचाना था, जो सरल भाषा में ही सम्भव था। इसके अतिरिक्त उसे पाठकों की सौंदर्य–चेतना को विकसित करना था। जनता में नये काव्य–संस्कार और नयी वेतना का विकास नयी भाषा के माध्यम से उसने किया।

7 रुपवाद की प्रतिक्रिया

पाश्चात्य साहित्य में लगभग एक सहस्र वर्ष के 'अन्धकार–युग' के पश्चात् 16वी ंशती के मध्याकाल में आरम्भ हुआ। मध्याकाल के पुर्वाद्ध में वहॉ जिस साहित्य का सृजन हुआ, जिन साहित्य–शास्त्रीय सिद्धान्तों का तथा मान्याताओं का प्रतिपादन हुआ, वह एक बड़ी सीमा तक प्लेटो, अरस्तु, होरेस, क्विटीलियन आदि पूर्व आचार्यो के सिद्धान्तों तथा मान्याताओं पर ही आधारित था। अतः इसमें पूर्व सिद्धान्तों की पुर्नस्थापना का काल कहा जा सकता हैं। इस काव्य–धारा में मानव की भौतिक आवश्यकताओं पर ही दृष्टि केन्द्रित की गयी हैं।

प्रगतिवादी काव्य–धारा की प्रवृतियॉ

भारतेन्दु–काल से ही हिन्दी–काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर मुखर होने लगे थे, किन्तु उस काल की राष्ट्रीयता अंग्रेजी शासन भक्ति समन्वित थी। देश–भक्ति और राज–भक्ति एक सीमा तक एक–दूसरे की पर्यायवाची सी बन गयी थी। द्विवेदी–काल की परिवर्तित स्थिति में देश–भक्ति के स्वर अधिक सबल हो गये और राज–भक्ति के स्वर मन्द पड़ गये। सन् 1929 ई. में महात्मा गॉधी के हाथ में राष्ट्रीय आन्दोलन के सूत्र आने पर इस आन्दोलन के स्वरुप में भी परिवर्तन हो गये। इस काल के राष्ट्रीय कवियों के काव्य में आन्दोलन के इसी स्वरुप अभिव्यक्ति हुई हैं। यह राष्ट्रीय काव्य भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की जिस उग्र विचारधारा को लेकर एक सर्वथा नवीन सासंकृतिक भावना के साथ विकसित हुआ, उसमें तत्कालीन समाज की आर्थिक दुरव्यवस्था साम्राज्यवादी, सामन्तवादी और पूॅजीवादी तत्वों द्वारा शोषित कृषक, श्रमिक और अन्य दलित वर्गो की दयनीय स्थिति, बलिदान तथा क्रान्ति की भावना, पूॅजीवादी समाज–व्यवस्था के परिवर्तन की पुकार नव समाजवादी व्यवस्था के निर्माण की तड़प आदि ने स्वभावतः स्थान ग्रहण कर लिया।

परिणामस्वरुप इस काल में राष्ट्रीय काव्य के साथ ही उस काव्यधारा का सूत्रपात भी हो गया, जिसे सन् 1936 ई. में ''प्रगतिवादी काव्यधारा'' की संज्ञा प्राप्त हुई। इस काल में काव्य से संबधित निम्नांकित प्रगतिवादी प्रवृत्तियॉ दिखाई देती हैं –

1. वस्तुनिष्ठ वैज्ञानिक दृष्टि और यर्थाथवादी चिन्तन
2. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
3. पूॅजीवाद, सामन्तवाद का विरोध
4. सामाजिक विषमता के प्रति विद्रोह और क्रान्ति
5. दलित वर्गों के प्रति सहानुभूति और करुणा
6. वर्ग–विहीन समाज की स्थापना और समतावाद
7. सौन्दर्य के प्रति यर्थाथवादी दृष्टि
8. प्रेम– निरुपण
9. धर्म और अध्यात्म का विरोध
10. छायावादी भावोच्छास का विरोध
11. जन–भाषा का प्रयोग

उपसंहारः–

इस काल में हमें, वस्तुनिष्ठ वैज्ञानिक दृष्टि और यर्थाथवादी चिन्तन, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, पूॅजीवाद, सामन्तवादका विरोध, सामाजिक विषमता के पगति विद्रोह और क्रान्ति, वर्ग–विहीन समाज की स्थापना और समतावाद, दलितवर्गो के पगति सहानुभूति और करुणा, सौन्दर्य के पगति, यर्थाथावादी दृष्टिकोण प्रेम–निरुपण, धर्म और अध्यात्म का विरोध, छायवादी भावोच्छास का विरोध और जनभाषा का प्रयोग आदि प्रवृत्तियॉ दिखाई देती हैं। इसके अर्न्तगत समाज की आर्थिक दुरवथ्था, साम्राज्यवादी, सामन्तवादी, और पूॅजीवादी तत्वों द्वारा शोषित कृषक, श्रमिक और अन्य दलित वर्गों की दयनीय स्थिति, बलिदान तथा क्रान्ति की भावना, पूॅजीवादी समाज–व्यवस्था के परिवर्तन की पुकार, नव समाजवादी व्यवस्था के निर्माण की तड़प आदि ने स्वभावतः स्थान ग्रहण किया हैं।

प्रगतिवादी कवि विलासिता में विलीन सौन्दर्य को गौरवान्वित नही करते, वरन् वे श्रम–साधना में संलग्न दलित नर–नारी के तन–मन और आचरण के सौन्दर्य का उद्घाटन करते साहित्य समाज का दर्पण हैं। समाज में होने वाली प्रत्येक घटना साहित्य का रुप धारण कर लेती हैं। विश्व–साहित्य की किसी भी काव्य–धारा का जन्म अनायास एक आकस्मिक घटना के रुप में कभी नहीं हुआ। प्रत्येक धारा परिस्थितिप्रसूत होती हैं। सन् 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का जन्म हुआ कि स्वंय कांग्रेस में गांधी ने हिंसा के भय से बार–बार जनता के आन्दोलन को रोक दिया था। उमड़ता हुआ जन–जीवन इसे स्वीकार नहीं कर पाया, अतः उग्र प्रतिक्रिया का स्वाभाविक था। मजदूरों का आन्दोलन भी ओर जोर पकड़ रहा था। इस वैचारिक उग्रता और समाजन्मुखता को बल दे रहीं थीं । तत्कालीन परिस्थितियॉ । राजनीतिक दासता देश में एक ओर पूॅजीवाद और सामन्तवाद की शोषक शक्तियों को प्रश्रय दे रही थी, दूसरी ओर जन–सामान्य के लिए अपार गरीबी, अशिक्षा, असुविधा, और अपमान की सृष्टि कर रही थी । इस राजनीतिक परिवेश के साथ ही सामाजिक परिवेश और विषमता, आर्थिक परिवेश और कृषक आन्दोलन, साहित्यिक परिवेश और प्रगति–चेतना, विदेशी–चिन्तनधाराओं का प्रभाव, छायावाद की प्रतिक्रिया, धर्म और

DSpace™

आध्यात्मिकता की प्रतिक्रिया, नारी –आन्दोलन, रुपवाद की प्रतिक्रिया, भाषिक क्रान्ति के फलस्वरुप 'प्रगतिवादी' आन्दोलन का सूत्रपात हुआ।

प्रगतिवादी आन्दोलन का सूत्रपात राष्ट्रीय स्वतन्त्रता–आन्दोलन की पृष्ठिभूमि में हुआ था। आरम्भ में प्रगतिवादी आन्दोलन राष्ट्रीय–आन्दोलन के अभिन्न अंग के रुप में ही उदित हुआ। भारत में सन् 1934 ई. में भारतीय साम्यवादी दल की स्थापना हुई। कालान्तर में साम्यवादी विचारधारा के अनुप्राणित साहित्य ही प्रगतिवादी साहित्य कहा जाने लगा।

प्रगतिववाद शब्द के मूल में 'प्रगति'शब्द समाहित हैं। 'प्रगति'शब्द की व्युत्पति संस्कृत के अनुसार 'प्र + गम् + क्तिन्' से हुई हैं,जिसका अर्थ पूर्ण अथवा उत्कृष्ट रुप से किसी भाव को, किसी विचार को गतिमान करना हैं।१

प्रगतिवाद साहित्य की संज्ञा उस साहित्य को दी गई जो छायावाद की समाप्ति पर सन् 1936 ईसवीं के आसपास सामाजिक चेतना को लेकर निर्मित होना शुरु हुआ। यह नाम उस काव्यधारा का हैं। जो मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना और भाव–बोध को अपना लक्ष्य बना कर चली। प्रगतिवादी साम्यवादी दर्शन की साहित्यिक या भावात्मक अभिव्यक्ति हैं। प्रगतिवादी विचारधारा का मूलाधार मार्क्सवाद या साम्यवाद हैं। इस वाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स ;1818–1853 ई. में थे।

मार्क्सवादी विचारधारा को मुख्यतः तीन शीर्षकों में विभाजित कर सकते हैं–– द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद, मूल्यवाद का सिद्धान्त, और मानव सभ्यता के विकास की व्यवस्था में विभाजित कर सकते हैं।

मार्क्सवाद आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग, नरक तथा मृत्यु के बाद का जीवन का आसित्व स्वीकार नहीं करता। उसका कोई अलौकिक या अध्यात्मिक रुप नहीं हैं। इसके अनुसार दो विरोधी शक्तियों के सघंर्ष से तीसरी शक्तियां वस्तु विकसित होती हैं, आगे चलकर तीसरी को चौथी से सघंर्ष करना पड़ता हैं और उससे पॉचवी का उद्भव होता हैं। इसी क्रम से भैतिक जगत् में नई–नई वस्तुओं, नये–नये रुपों, नई–नई शक्तियों और सत्ताओं का विकास होता रहता हैं।

मानव–सभ्यता का समस्त इतिहास शोषक–वर्ग और शोषित–वर्ग इन दोनों वर्गो के बीच संघर्ष की कहानी हैं। इस कहानी को भी दास–प्रथा, सामन्ती–प्रथा, पूॅजीवादी व्यवस्था तथा सामन्तवादी–प्रथा रुपी कई पड़ाव डालने पड़े। साम्यवादी व्यवस्था में मजदूरों की प्रतिनिधि सरकार द्वारा उत्पादन के समस्त साधनों पर नियन्त्रण हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसके परिश्रम के अनुरुप फल मिल सके ।

संक्षेप में प्रगतिवादी साहित्य मार्क्सवादी चिन्तन से प्रेरित समाजोन्मुख साहित्य हैं जो पूॅजीवाद, शोषण और अन्याय के विरुद्ध विद्रोह जगा कर वर्ग–विहीन समाज की स्थापना में विश्वास रखता हैं।

पहला 'प्रगतिशील लेखक–संघ' का अधिवेशन लखनऊ में 1936 ई. के अप्रैल में आयोजित किया गया और इसके अध्यक्ष प्रेमचन्द बनाये गये। 1936 के बाद 1938 में कलकत्ता में,प्रगतिशील लेखक–संघ की बैठक 1940 ई. में पूना हुई, दिल्ली में फासिस्ट विरोधी प्रगतिशील लेखक सम्मेलन 1942 ई. में हुआ। प्रगतिशील लेखक संघ का अधिवेशन जनवरी 1944 ई. इन्दौर में हुआ। अजादी के बाद इलाहाबाद में सितम्बर 1947 ई. में अखिल भारतीय हिन्दी प्रगतिशील लेखक संघ का विशाल अधिवेशन हुआ। इसके घोषणा–पत्र में जनवादी शक्तियों को मजबूत कर देश की जनता के सांस्कृतिक धरातल को ऊपर उठाने का आग्रह किया गया। 1949 ई. में प्रगतिशील लेखक संघ का अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ जिसके अध्यक्ष नागार्जुन थे। इस नवीनधारा को कई विरोधों का सामना करना पड़ा। इसके साथ इसे कई पत्र–पत्रिकाओं का सहयोग भी मिलता रहा।

प्रगतिवादी साहित्य और प्रगतिशील साहित्य में भी इस प्रकार अन्तर स्पष्ट किया जा सकता हैं।

जो साहित्य प्रगतिवादी आन्दोलन की प्ररेणा से, खास किस्म के राजनीतिक विचारों की छाया लिए, सामाजिकता अथवा मानवतावाद की विशिष्ट धारणाओं से निम्रित हैं, वह प्रगतिवादी साहित्य हैं। जिस साहित्य में बिना किसी राजनीतिक दुराग्रह के सहज मानवीय विकास की प्ररेणा निहित हो वह प्रगतिशील साहित्य हैं। प्रगतिवाद में धर्म, भाग्य और ईश्वर के प्रति अनास्था व्यक्त हुई हैं। प्रगतिवादी कवियों नागार्जुन, केदारनाथ सिंह, त्रिभुवन, शिवमगंलसिंह 'सुमन', रामविलास शर्मा, आदि सात्यवाद में आस्था रखने वाले कवियों में भी पूरे वेग के साथ व्यक्त हुई ही हैं, साथ ही नरेन्द्र शर्मा, शील, भगवतीचरण वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर', निराला, पन्त, नवीन, आदि कवियों की कृतियों में भी पूरी शक्ति के साथ निरुपित हुई हैं जो विचारधारा के सैद्धानतिक स्तर पर साम्यवाद से सीधे सम्बद्ध नहीं हैं। सच तो यह हैं कि प्रगतिवादी कविता का स्वच्छद मानवीय भाव–बोध इन्हीं कवियों की कृतियों में अधिक नैसर्गिक रुप में उजागर हुआ हैं। प्रगतिवादी कवियों ने सामान्य वर्ग की दुर्दशा को चित्रित करने तथा पूॅजीवादी शोंषकों के प्रति आक्रोश व्यक्त करने में अपनी पूरी शक्ति लगायी हैं। अतः कविता में करुण रस,वीर –रस का समावेश हुआ हैं। कविता जन–जीवन से जुड़ी हैं, इसी प्रकार उसने ग्रामीण परिवेश और प्रकृति को अपनी कविता का आधार बनाया। सामान्य विषयों को अपनाने के कारण ही भाषा भी सामान्य हो गयी । इस पूरे आन्दोलन ने 'राम की शक्तिपूजा', 'तुलसीदास', 'कामायनी', 'ऑसू', 'पल्लव' आदि के स्तर की किसी रचना को जन्म नहीं दिया । फिर भी कुल मिलाकर जीवन के दुःखद यर्थाथ को वाणी देकर प्रगतिवादी कवियों ने कविता को जन–जीवन के धरातल पर प्रतिष्ठित करने में सफलता प्राप्त की हैं।

संदर्भ ग्रन्थः–

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त – हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृष्ठ –742

डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा, डॉ. रामनिवास गुप्त, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ – 425

आलोचना, अप्रैल–जून, 1970

हंस, अप्रैल, 1936

'हंस', अक्तूबर, 1942

भगवतशरण उपाध्याय, 'संकेत' प्रगति का ऐरावत, पृष्ठ –251–252

हंस', जनवरी, 1950

डॉ. कृष्णलाल 'हंस', प्रगतिवादी काव्य– साहित्य, पृष्ठ – 77

डॉ. सरिता माहेश्वर – प्रगतिवादी, प्रयोगवाद नयी कविता, पृष्ठ –38–39

डॉ. सरिता माहेश्वर, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी – कविता, पृष्ठ –41

डॉ. देवराज शर्मा 'पथिक', हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा एक समग्र अनुशीलन, इन्द्रप्रस्त प्रकाशन,के–71, प्रथम संस्करण, 1976

डॉ. धर्मपाल सरीन, हिन्दी साहित्येतिहास, भाम्बड़ी प्रिटिंग प्रैस, मिट्ठा बाजार, जालन्धर शहर, संस्करण,1980

सम्पा.डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्क. 1973

डॉ. नगेन्द्र आधुनिक साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियॉं, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, तृतीय संस्करण, 1976

डॉ. नन्ददुलारे वाजपेयी, कवि निराला, वाणी वितान प्रकाशन ब्रह्मनाल वाराणासी, प्रथम संस्क. 1965

डॉ. एम. रगंय्या, हिन्दी और तेलगु काव्य में प्रगतिवादी चेतना (तुलनात्मक अध्ययन), हिन्दी साहित्य भण्डार–55, चौपठियॉ रोपड़, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 1965

मरिस कोन फोर्थ, डाईलेक्टिकल मैटिरियालिज्म कलकत्ता, 1957 (प्रथम–भाग)

रामधारी सिंह 'दिनकर', संस्कृति के चार अध्याय, पाल एण्ड सन्स, संस्करण 1956
डॉ. रामसजन पाण्डेय, विविध साहित्यकवाद अभिनव प्रकाशन,बड़ा बाजार, रोहतक,प्रथम संस्करण 1990
श्री राजनाथ शर्मा हिन्दी साहित्य का विवेचनात्म इतिहास, विनोद पुस्तक मंन्दिर आगरा–2, प्रथम संस्करण 1968
डॉ. शिवचन्द्र, प्रगतिवाद की रुपरेखा, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1947
डॉ. सरिता, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, अप्रतिम प्रकाशन–बी.206, सादतपुर, दिल्ली।
डॉ. हरिशचन्द्र वर्मा, डॉ. रामनिवास गुप्त, हिन्दी साहित्य का इतिहास मंथन पब्लिकेशन, रोहतक, प्रथम संस्क.1982

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net